परमात्म ऊर्जा

विघ्नों को मिटाने की युक्तियां अगर सदैव साथ हैं तो पुरुषार्थ में ढीले नहीं होंगे। युक्तियां भूल जाते हैं तो पुरुषार्थ में ढीला हो जाता है। एक-एक बात के लिए कितनी युक्तियां मिली हैं? प्राप्ति कितनी बड़ी है और रास्ता कितना सरल है। जो अनेक जन्म पुरुषार्थ करने पर भी कोई नहीं पा सकते। वह एक जन्म के भी कुछ घड़ियों में प्राप्त कर रहे हो। इतना नशा रहता है ना! 'इच्छा मात्रम अविद्या' ऐसी अवस्था प्राप्त करने का तरीका बताया। ऐसी ऊंची नॉलेज और कितनी महीन है। जीवन में इतना ऊंचा लक्ष्य कोई रख नहीं सकता कि मैं देवता बन सकता हूँ। यह कब सोचा था कि हम ही देवता थे? सोचा क्या था और बनते क्या हो? बिन मांगे अमूल्य रत्न मिल जाते हैं। ऐसे पदमा पदम भाग्यशाली अपने को समझते हो? प्रेसिडेंट आदि भी आपके आगे क्या हैं? इतनी ऊंची दृष्टि, इतना ऊंचा स्वमान याद रहता है कि कब भूल भी जाते हो? स्मृति-विस्मृति की चढ़ाई उतरते-चढ़ते हो? गन्दगी से मच्छर आदि प्रकट होते हैं इसलिए उनको हटाया जाता है। वैसे ही अपनी कमज़ोरी से माया के कीड़े पकड़ लेते हैं। कमज़ोरी को आने न दो तो माया आयेगी नहीं।

सदैव यह याद रखो कि सर्वशक्तिवान के साथ हमारा सम्बन्ध है। फिर कमज़ोरी क्यों? सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे होते भी माया की शक्ति को खलास नहीं कर सकते। एक बात सदैव याद रखो कि बाप मेरा सर्वशक्तिवान है। हम सभी से श्रेष्ठ सूर्यवंशी हैं। हमारे ऊपर माया कैसे वार कर सकती है! अपना बाप, अपना वंश याद रखेंगे तो माया कुछ भी नहीं कर सकेगी।

स्मृति स्वरूप बनना है। इतने जन्म विस्मृति में रहे फिर भी विस्मृति अच्छी लगती है? 63 जन्म विस्मृति में धोखा खाया, अब एक जन्म के लिए धोखे से बचना मुश्किल लगता है? अगर बार-बार कमज़ोर बनते, चेकिंग नहीं रखते तो फिर उनकी नेचर ही कमज़ोर बन जाती है। अवस्था चेक कर अपने को ताकतवर बनाना है, कमज़ोरी को बदल शक्ति लानी है।

कथा सरिता

दूसरों की मदद करना सीखें...

एक दिन की बात है। सुनीता को बुखार चढ़ गया, उसकी माँ उसको डॉक्टर के पास लेकर गयी तो पता चला कि उसको डेंगू हो गया है। डॉक्टर ने पचास हज़ार रूपये मांगे। सुनीता की माँ के पास कुछ गहने थे। उसने अपने गहनों को बेच दिया और कुल मिलाकर चालीस हज़ार ही हो पाया। सुनीता की माँ ने डॉक्टर से बोला आप इतना ले लो और मेरी सुनीता को बचा लो। लेकिन डॉक्टर ने बोला हम तो पूरे पैसे लेने के बाद ही एडमिट करते हैं, उसकी माँ रोती रही लेकिन कोई ने नहीं सुना।

वह अपनी मालकिन के पास गयी और उसको सारी बात बतायी तो उसने भी बोला मैं नहीं दूंगी इतना पैसा। सुनीता की माँ का रो-रो कर बुरा हाल हो गया था, पूरा दिन बीत गया और उसकी बेटी की तबियत और खराब हो गयी। उसकी माँ ने पूरी रात कुछ भी नहीं खाया और कब सो गयी यह भी पता नहीं चला। सुबह जब वो सोकर उठी तो उसने देखा कि सुनीता अभी भी सोयी है, उसके पास जाकर उसके हाथ को पकड़ा तो डर गयी और ज़ोर से रोने लगी क्योंकि सुनीता मर चुकी थी। सिर्फ दस हज़ार रूपये के लिए किसी ने भी उसकी मदद नहीं की और उसकी जान चली गयी।

शिक्षा : कब तक हम लोग ऐसा करेंगे, पैसा ही सबकुछ नहीं होता है। आज सुनीता के साथ है कल आप के साथ भी ऐसा हो सकता है, इसलिए दूसरों की मदद ज़रूर करें।

बुरी आदत

हम सब लोग किसी न किसी बुरी आदत से परेशान रहते हैं और बहुत ही कोशिश करने के बाद वो आदत नासूर बन जाती है और उस आदत को छोड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। अगर हम लोग अपनी बुरी आदत को कंट्रोल कर लें तो कभी भी असफल नहीं होंगे। बहुत समय पहले की बात है, एक बहुत ही धनी आदमी था, उसका एक ही बेटा था और उसकी बहुत सारी आदतें बहुत ही बुरी थीं। जब भी उसका पिता उसको बुरी आदत छोड़ने को बोलता तो बस वह एक ही जवाब देता - अभी तो मैं छोटा हूँ, बड़े होने पर सब छूट जायेगी। लेकिन उसका पिता इस बात से बहुत ही चिंतित रहता था।

एक दिन उसके नगर से एक महात्मा जी आये तो उसको पता चला और वह महात्मा जी के पास गया। उनको अपने बेटे के बारे में सब कुछ साफ-साफ बता दिया। फिर महात्मा जी ने बोला - आप कल सुबह अपने बेटे को मेरे पास लेकर आइये। अगले दिन सुबह ही वह अपने बेटे को लेकर महात्मा जी के पास पहुंच गया। महात्मा जी उसको लेकर बगीचे में चले गए और रास्ते में एक छोटा-सा पेड़ पड़ा, महात्मा जी ने उस लड़के से उसे उखाड़ने को कहा तो वह तुरंत गया और पेड़ को उखाड़ कर फेंक दिया। थोड़ी दूर और जाने पर एक और पेड़ आया तो महात्मा जी ने उसको भी उखाड़ कर फेंकने को कहा- उसने उसको भी उखाड़ दिया।

लड़के के पिता जी सबकुछ बहुत ही ध्यान से देख रहे थे। कुछ दूर और चलने के बाद एक और बड़ा और मजबूत-सा पेड़ दिखाई दिया, महात्मा जी ने लड़के से कहा- इसको भी उखाड़ दो, वह बहुत ही तेजी से गया लेकिन वह उस पेड़ को नहीं उखाड़ पाया। क्योंकि वह बहुत मजबूत हो गया था। फिर महात्मा जी ने उस लड़के को बुलाया और बोला जिस तरह तुम इस बड़े पेड़ को नहीं उखाड़ पा रहे थे उसी तरह तुम अपनी बुरी आदत बड़े होने पर नहीं बदल सकते हो। लड़का इस बात को समझ गया और अपनी सारी बुरी आदत छोड़ने की कसम खा ली।

सीखः इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि अगर हम लोग अपनी बुरी आदत जल्दी नहीं छोड़ेंगे तो बाद में हम लोगों को बहुत ज़्यादा परेशानी होगी।

कतारगाम-सूरत(गुज.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लक्ष्मीकान्त पाठशाला,कतारगाम में आयोजित 'आध्यात्मिक झाँकी एवं होलोग्राफिक प्रोजेक्टर शो' कार्यक्रम में दक्षेशभाई मावाणी,बीजेपी कॉर्पोरेटर,वार्ड नं 6, साधनाबेन सावलिया,एस24 न्यूज़ ओनर, प्रवीणाबेन,महिला मोर्चा उपप्रमुख तथा अन्य गणमान्य लोगों व ब्र.कु. भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग उपस्थित रहे।

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. प्रियंवदा भसीन,अध्यक्ष,आई.एम.ए. ग्वालियर,चेयरमैन अपोलो हॉस्पिटल एवं रतन ज्योति नेत्रालय ग्वालियर, डॉ. सुनील अग्रवाल,प्रोफेसर सर्जरी गजरा राजा मेडिकल कॉलेज ग्वालियर,अध्यक्ष मध्य प्रदेश प्रोग्रेसिव मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन, कमल माखीजानी,जिला अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी, ब्र.कु. आदर्श बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. डॉ. गुरुचरण भाई, ब्र.कु. प्रहलाद भाई, ब्र.कु. महिमा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।